E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

वर्तमान युग में महात्मा गांधी और विनोबा भावे के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता

सतीश कुमार

पीजीटी-इतिहास, कर्मचारी आईडी – 079226, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.12775165

भूमिका :

आज सम्पूर्ण विश्व में विशेषतः अशांति एवं मूल्यहीनता व्याप्त है। इस विकट स्थिति में महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के विचारों का टिमटिमाता दीपक अनवरत प्रकाश दे रहा है। आज समाज समृद्धि और गरीबी, स्वतन्त्रता और शोषण, सामाजिक सम्बन्ध एवं अलगाव के विरोधाभास में फंसा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के उन्हीं मूल्यों और सिद्धान्तों की पुनरावृत्ति करे, जिससे मानवता और देश का विकास हो और एकता तथा शांति स्थापित हो। शिक्षा इसमें बहुत ही अहम भूमिका निभा सकती है।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार समस्त विश्व के लिए उपयोगी है और इनका भूमण्डल को बचाने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। नैतिक मूल्यों को 1900-2000 शताब्दी तक चार अवस्थाओं में रखा जा सकता है। पहली अवस्था में नैतिक मूल्य चरम सीमा पर थे, दूसरी अवस्था में कुछ घंटे, तीसरी अवस्था में और अधिक नीचे आए और चौथी अवस्था में अब ऐसा लगता है कि ये पूर्णतया नष्ट हो रहे है। गांधी जी और विनोबा भावे जी का शिक्षा मार्ग ही हमें इस विनाश से बचा सकता है। जो शिक्षा नैतिक एवं भावनात्मक मूल्यों को उपेक्षा करती है वह एक मधुमक्खी के छते केसमान है, जिसमें जीवन जीते हुए भी सजीव जीवन का अभाव रहता है।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी कोई भविष्य वक्ता नहीं थे, परन्तु ऐसा लग रहा है कि शताब्दियों पूर्व गांधी ने जिन औद्योगिक एवं तकनीकी समाज से उत्पन्न समस्याओं की ओर सचेत किया था, वे आज वर्तमान है। [1] समकालीन भारतीय समाज में घोर भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति पनप गई है। मानव एक तरफ हिंसा और दूसरी तरफ अलगाव के बीच छटपटा रहा है। ऐसी विकट परिस्थितियों में गांधी जी और विनोबा भावे जी ने मूल्यों की शिक्षा की स्थापना की। गांधी जी और विनोबा भावे जी ने मानव को उसके नैतिक परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा की और इसी कारण तकनीकी युग से उत्पन्न त्रासदी की ओर संकेत दिया। गांधी और विनोबा ने जिन मूल्यों की स्थापना की है, वे कोई तत्त्वमीमांसा पर आधारित नहीं है बल्कि अनुभूतियों की धरती पर खड़े है। मानव स्वभाव, सामाजिक रिश्ते और संघर्षों से उत्पन्न विचारों के आधार पर गांधी और विनोबा जी ने अपने जीवन दर्शन का ताना बाना बुना है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षा सामाजिक बचाव और सामाजिक समानता के लक्ष्य तक पहुंचने का प्रमुख साधन है। गांधी और विनोबा की दृष्टि में भी शिक्षा सामाजिक क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का साधन थी। गांधी जी इस बात को जानते थे कि बिना सामाजिक परिवर्तन के कोई सामाजिक सुधार नहीं हो सकता। इसलिए दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने शिक्षा को व्यापक रूप में अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष का साधन बनाया और फिर भारत में शिक्षा को आजादी की लड़ाई का साधन बनाया। उसके बाद आर्थिक आजादी के लिए स्वतन्त्रता और स्वावलम्बन के लिए उन्होंने शिक्षा का माध्यम बनाया। गांधी और विनोबा जी केवल कक्षा या आश्रम के शिक्षक नहीं थे, जिन्होंने एक मृत राष्ट्र को प्राण देकर उनका मानस बदल कर रख दिया। इसीलिए लुई फिशर कहा है कि गांधी एक राजनीतिक नेता ही नहीं थे बल्कि बहुत बड़े शिक्षक थे। भारत का अपना इस समय न तो कोई जीवन दर्शन है और न ही शिक्षा दर्शन। राष्ट्रीय शिक्षा नीति वस्तुतः पाश्चात्य पूंजीवाद से प्रेरणा प्राप्त कर रही है। गांधी जी का शिक्षा दर्शन सर्वोदय के सिद्धान्त पर आधारित है और जब तक सर्वोदय दर्शन की आत्मा नहीं पहचानी जाती, तब तक गांधी शिक्षा दर्शन भी नहीं समझा जा सकता है। यह कितनी हास्यप्रद बात है कि कोठारी कमीशन ने यह तो स्वीकार किया कि गांधी के शिक्षा सिद्धान्त सभी स्तरों के लिए उपयोगी है, किन्तु उनके सिद्धान्तों के क्रियान्वय के लिए कोई सुनिश्चित योजना प्रस्तुत नहीं की। शिक्षा का व्यवसायीकरण सीखने के साथ-साथ कमाना - यह सिद्धान्त ऐसे अधकचरे रूप में प्रस्तुत किया गया है कि उससे कोई लाभ नहीं हुआ।

चरित्र का निर्माण एक बढ़ते हुए वृक्ष के समान है ? यदि इसकी जड़े आरम्भ से ही दुर्बल हो गई तो लाख प्रयास करने पर भी वृक्ष स्वस्थ नहीं हो सकता। यही बात बच्चे के विकास में लागू है। आज बच्चों की एक ऐसी सेना तैयार हो रही है जो अपने कपड़े स्वयं नहीं पहन सकती, जो अपना होमवर्क स्वयं नहीं कर सकती, वह आगामी जीवन में आत्मनिर्भर कैसे सीखेगी ? शिक्षा केवल अर्थोपार्जन के लिए नहीं है केवल आर्थिक स्वावलम्बन के लिए नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव विकास के लिए है।

'सा विद्या या विमुक्तये" [2] शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके द्वारा अज्ञानता को दूर किया जा सकता है। इस अज्ञानता से गांधी जी का अर्थ था आत्मा की शुद्धता। इसके बल पर ही मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य हो सकता है। उन्होंने शारीरिक श्रम को शिक्षा का अभिन्न अंग माना है। दूसरों से उन्होंने 'Breat labour' सिद्धान्त को ग्रहण किया और उसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में मान्यता दिलाई। भारतीय हस्त कला की शिक्षा द्वारा गरीबी दूर की जा सकती है। इसलिए इस शिक्षा को उन्होंने काफी महत्त्व दिया है। चरित्र निर्माण और उच्च नैतिक मूल्यों के बिना हमारी शिक्षा अधुरी ही रहेगी। उन्होंने भारत की बढ़ती हुई आबादी को ध्यान में रखते हुए और उसी के अनुरूप ऐसी शिक्षा पद्धति की स्थापना करने को सोचा, जो समाज के लिए सुलभ हो सके। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के महत्त्व को नहीं समझा लेकिन शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बतलाया है। [3]

स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को गांधी जी ने समझा। उनका कथन है कि "पारिवारिक गाड़ी के सुसंचालन में स्त्री-पुरुष दोनों को शिक्षित होना आवश्यक है। एक पहिये के विपरीत स्थिति में रहने के कारण दाम्पत्यरूपी गाड़ी का सुसंचालन सुविधाजनक और शांतिपूर्ण ढंगसे नहीं हो सकेगा। [4]

गांधी जी ने अपने शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा भाषणों में स्त्री-शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बतलाया है और बाल्यावस्था से ही बालिकाओं की शिक्षा का विधान किया है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

शिक्षा सर्वप्रथम माता की गोद से ही शुरू होती है। आधुनिक मनोविज्ञानिकों का कहना है कि बालक अपनी माता के गर्भ काल में ही उन कतिपय संस्कारों को अपना लेता है, जो उसके भावी जीवन को बहुत प्रभावित करते है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते है जिससे मालूम होता है कि संसार में कई महापुरुषों का निर्माण उनकी माता द्वारा उनको बाल्यावस्था में दी गई शिक्षा के आधार पर ही हुआ है। शैशवावस्था तथा बाल्यावस्था में बालक अपनी माता से अत्यधिक प्रभावित होते है। अतः बालिकाओं की शिक्षा कितनी आवश्यक है इसे कोई भी विचारशील व्यक्ति सहज ही अनुभव कर सकता है। किसी विद्वान ने कहा है कि "एक पुरुष को शिक्षित करके एक व्यक्ति को ही शिक्षित किया जा सकता है, परन्तु एक बालिका को शिक्षित करने का तात्पर्य है पूरे परिवार को शिक्षित बनाना।" अतः आज भारत में स्त्री-शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है।

परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री-पुरुष का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान होते हुए भी आधुनिक भारत की अधिकांश स्त्रियां अशिक्षित है। मामूली पढ़ने-लिखने में भी वे सर्वथा अनभिज्ञ है। शहरों में बालिकाओं को पढ़ाने की कुछ व्यवस्था हुई है, परन्तु गांव की अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। देहातों में तो बालिकाओं को विद्यालयों में नहीं भेजा जाता। [5]

स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को गांधी और विनोबा जी ने काफी समझा। उनका मन था कि सह शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए बालिका विद्यालयों की स्थापना की जा सकती है। महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी शारीरिक दण्ड देने के विरोधी थे। प्रेम, सौहार्द और आत्मनिर्भर के प्रदर्शन से छात्रों के हृदय पर साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है अतएव शिक्षकों को ऐसा आचरण प्रदर्शित करना चाहिए, जिसके द्वारा छात्र एक महान आदर्श की प्राप्ति कर सके। यह एक मनोवैज्ञानिक सुझाव है जिसे गांधी जी ने लिया।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ग्राम विश्वविद्यालय की स्थापना प्रस्तावित की गई है। पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केवल इसी पैराग्राफ में गांधी और उनके क्रांतिकारी विचारों का स्मरण किया गया है। कदाचित या तो इसका साहस नहीं हुआ या तो विद्वान नीति निर्धारकों की समझ में नहीं आया कि बुनियादी शिक्षा का भी, जिसे गांधी जी ने कहा था कि वह राष्ट्र को उनकी सबसे बड़ी भेंट है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के चिंतन की विसंगति का परिणाम है। बुनियादी शिक्षा संस्था संकुचित नहीं है वह व्यापक सामाजिक क्रांति का संदेश है, एक विशाल आंदोलन है, जिसका उद्देश्य केवल देश को नहीं, समस्त मानवता को अपनी परिधि में लेना है।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिससे समाज और व्यक्ति के परस्पर सम्बन्धों का विकास होता है। यह आचार्य और शिष्य के घनिष्ठ सम्बन्ध से सम्भव है।

यह कहा जा सकता है कि गांधी और विनोबा जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन या नैतिक, सामाजिक और आर्थिक दर्शन से अलग नहीं समझा जा सकता। जिस प्रकार जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों को विभाजित नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार उनके शिक्षा दर्शन को जीवन दर्शन से अलग नहीं किया जा सकता। वही एक मूल बात ऐसी है जो इन्हें अन्य महापुरुषों से अलग रखती है, क्योंकि जिस समग्रता से गांधी जी ने जीवन को देखा, उस समग्रता से अन्य किसी ने नहीं। पाश्चात्य जगत में प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेक दार्शनिकों ने शिक्षा का दर्शन दिया, किन्तु वे सभी अपनी परिस्थितियों व सीमाओं से जुड़े हुए थे।

इसलिए वे शिक्षा दर्शन को जीवन दर्शन से एक रूप नहीं कर सके और समाज को शाश्वत मूल्यों पर आधारित शिक्षा दर्शन नहीं दे सके।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

गांधी और विनोबा जी को शिक्षा दर्शन के सार रूप में यदि कहा जाए तो वह शारीरिक श्रम पर आधारित सरल और सारे जीवन के निर्माण की प्रक्रिया है। राजनीति अर्थ और नैतिकता की दृष्टि से उसका आधार शोषण और प्रतियोगिता नहीं है। नैतिकता विहीन बाजार का अर्थशास्त्र नहीं है। गांधी जी की शिक्षा मन, वचन और आचरण का समन्वय है, उसमें व्यक्ति और समाज का सामंजस्य है, उसमें आन्तरिक और बाह्य जगत का एकीकरण है, उसमें धर्म की सच्ची परिभाषा है। समाजोपयोगी, लाभ से रहित, उत्पाद के कार्य में हर व्यक्ति को लगाना, हर व्यक्ति को उत्पादक और उपभोक्ता बनाना, यह गांधी के शिक्षा दर्शन का प्रमुख सूत्र है। [6]

प्रश्न यह है कि बावजूद सही चिन्तन के, शिक्षा में सुधार क्यों नहीं होता? इसका मुख्य कारण है कि चिन्तन और आचरण में, सिद्धान्त और व्यवहार में, ज्ञान और कर्म में बहुत अन्तर आ गया है।

आज गांधी जी और विनोबा जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की इसलिए बहुत आवश्यकता है, क्योंकि वातावरण बहुत दूषित हो चुका है। जब कोई मनुष्य वृक्ष की जड़ों में पानी नहीं डालकर, उसकी पत्तियों तथा टहनियों में डालता है, तो वह इसलिए करता है कि उसे पर्याप्त ज्ञान नहीं है। वह नियमों का ठीक से पालन नहीं करता। आधुनिक शिक्षा में केवल भौतिक तत्त्वों तथा शारीरिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है। फलस्वरूप शैक्षिक ज्ञान पूर्ण नहीं है। शिक्षा से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका विशेष अर्थ है कि "नीर-क्षीर विवेक करने वाली शक्ति ओर ज्ञान का अर्थ है, आत्मा तथा पदार्थ को जान लेना। स्कूल और विश्वविद्यालय की शिक्षा से प्राप्त सामान्य ज्ञान पदार्थ सम्बन्धित होता है, इसे ज्ञान स्वीकार नहीं किया जा सकता। ज्ञान का अर्थ है आत्मा तथा भौतिक पदार्थ के अन्तर को जानना आवश्यक है। शिक्षा का कार्य जोड़ना है न कि तोड़ना।

जब तक हम सत्य व ईमानदारी के रास्ते पर नहीं चलेंगे, सही मायने में आजाद नहीं हो सकते। प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सत्य व ईमानदारी की शिक्षा को शामिल करना होगा।

प्राचीन युग से ही मनुष्य के सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक विकास तथा सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा से मनुष्य की बुद्धि तथा मस्तिष्क प्रखर होता है। व्यक्ति के स्वभाव को शुद्ध एवं सुसंस्कृत शिक्षा के ही सहयोग से किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने शिक्षा द्वारा विकसित और परिष्कृत बुद्धि को ही मनुष्य का वास्तविक बल कहा है। शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक आदर, समानता ही नहीं प्रदान करती, बल्कि उसे धन और यश का भी भागी बनाता है। मानव के साथ समाज का भी आध्यात्मिक और भौतिक उत्कर्ष शिक्षा से ही सम्भव माना गया है। शास्त्र और विवेक से शिक्षा सम्पन्न होती है और शिक्षा से मनुष्य में ज्ञान का उलूक होता है। इसलिए शिक्षा को मोक्ष के प्रदान के साथ ही साथ शिल्प में निपुणता प्रदान करने वाला कहा है। शिक्षा इहलोक और परलोक दोनों को व्यवस्थित करती है।

हमारे अन्धविश्वासों की समापन, दूसरों के परिचय, न्यायप्रियता, दूरदर्शिता बोधक क्षमता, त्रदिहीनता, सहभागिता और आत्मसंयम आदि की विवेचना तथा स्थापना में अहम भूमिका रही है। प्राचीन भारत में मंत्रों आदि को रट लेने का कभी भी महत्त्व नहीं रहा है। महाभारत में स्पष्टतः कहा गया है कि विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान रखने पर भी व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि का विकास नहीं हुआ और उसमें अन्तज्योति की उपलब्धि नहीं हुई तो वह मूर्ख ही है, क्योंकि क्रियावान पुरुष ही सच्चे अर्थों में शिक्षित कहलाता है। स्मृतिकारों ने भी शिक्षा की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है कि शिक्षा (स्वाध्याय) से शरीर

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

को ब्रह्म की प्राप्ति के योग्य बनाता जाता है। प्राप्त शिक्षा को आलस्यवश विस्मृत कर देना ब्रह्म हत्या के समान माना गया है। शिक्षित व्यक्ति को अनादरवाची सम्बोधनों से पुकारने का निषेध रहा है। व्यक्ति की ज्येष्ठता श्रेष्ठता का प्रतीक उसके सफेद बाल या आयु नहीं, बल्कि उसकी विद्वता (शिक्षा) होती है। शिक्षा की महत्ता की लौकिक कारणों द्वारा भी बार-बार यह कहने का यत्न हुआ है कि शिक्षा केवल विराट का परम अनुभव ही नहीं, लोक में भी उतनी उपादेय है। इसके कारण जो माध्यम लोक-परलोक दोनों के निर्माण में इतना प्रभावी हो उसका सामाजिक संदर्भों में इतना महत्त्वपूर्ण होना स्वाभाविक है।' [7]

महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी का मानना था कि शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नहीं सकता। यदि पुरुषों और स्त्रियों में से केवल किसी एक के लिए शिक्षा का प्रावधान करना है तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाने चाहिए, क्योंकि तब वह शिक्षा स्वयंमेय अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जाएगी। 1963 में वनस्थली विद्यापीठ में भाषण देते हुए नेहरू ने भी इसी तथ्य को दोहराया था कि लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है परन्तु एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। इस कथन में भी अतिश्योक्ति नहीं है। वस्तुतः घर वैसा होता है जैसा उसे गृहिणी बनाती है। और बच्चे वैसे बनते है जैसा उन्हें मां बनाती है। बालक की शिक्षा गर्भ से ही शुरू हो जाती है। मां अपने विचारों के माध्यम से जो संस्कार बालक को प्रदान करती है, बालक वेसा ही बनता है।

ये संस्कार मां के अतिरिक्त कोई अन्य प्रदान नहीं कर सकता। जन्म के बाद के प्रारम्भिक वर्षों में बालक की हर गतिविधि पर मां का ही नियन्त्रण होता है। सामान्यतः हर स्त्री को यह भूमिका निभानी ही है। अतः स्त्रियों का शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। मनुस्मृति में कहा गया है कि उपाध्याय से दस गुणी अधिक महत्ता आचार्य की है, सौ आचार्यों के समान महत्ता पिता की है और हजार पिताओं से बढ़कर महत्ता मां की है। गृहिणी के रूप में भी नारी के उत्तरदायित्व महान है। उसे अपने विशेष प्रयास से ऐसे मधुर पारिवारिक सम्बन्धों का निर्माण करना है जो ईंट-पत्थर के घर को प्रेम और आदर का अक्षय भण्डार बना देती है। श्री सैयदेन के शब्दों में कि ज्ञान अच्छा है, बौद्धिक सम्पन्नता भी अच्छी है और विवेक भी अधिक मूल्यवान गुण है, पर यदि वे जीवन की रचना को पूर्ण नहीं बनाते, उसमें संघटित नहीं हो जाते और किसी स्त्री को इस योग्य नहीं बनाते कि उसका जीवन कलाकृति बन जाए, तो उनका कोई महत्त्व नहीं। किसी स्त्री की शिक्षा की बहुत अधिक सार्थकता इसमें है कि वह अपने ज्ञान का, बौद्धिक समानता का, विवेक का विनियोग पारिवारिक जीवन को सुन्दर बनाने में काटे। उसके और विश्वास कीजिए केवल उसी के प्रयास से परिवार प्रेम का एक ऐसा केन्द्र बन सकता है जिसके आधार पर परिवार के हर सदस्य का जीवन चले, दूर छिटक न सके। आत्मा के समस्त गुण उसी से जीवन में अति है। निःसंदेह स्त्री की ये महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं है। [8] जिस प्रकार अनेक महापुरुषों ने मानव कल्याण के लिए अपना घर और परिवार छोड़कर अपना जीवन किसी महान साधना को समर्पित कर दिया, वैसा अवसर स्त्रियों को भी मिलना चाहिए। पत्नी और मां के रूप में स्त्री को उच्च कोटि के गुणों और कुशलताओं का प्रयोग करने का अवसर मिलता है, पर यदि कोई स्त्री सोचती है कि वह एकाकी रहकर अपने जीवन के उद्देश्य अधिक अच्छी तरह से पूरे कर सकती है, अपने जीवन को अधिक सार्थक बना सकती है, तो उसे उसके लिए पूरा अवसर मिलना चाहिए, पर उसके लिए शिक्षा और भी महत्त्वपूर्ण हो जाएगी। मध्यमवर्गी परिवारों में ऐसे अवसर प्रायः आते है जब परिवार को अधिक सहयोग देना आवश्यक होता है और स्त्रियों को कोई व्यवसाय अपनाना पड़ता है। कभी परिवार के मुख्यसदस्य के न रहने पर स्वयं के भरण-पोषण की चिन्ता करनी पड़ती है। अपने आश्रितों की भी चिन्ता करनी पड़ती है। आजकल की सामाजिक व्यवस्था में, वर्तमान महंगाई के इस युग में और व्यस्तता के इस युग में स्त्री शिक्षा का महत्त्व इस दृष्टि से और भी बढ़ गया है। सफल जनतन्त्र की स्थापना के लिए भी स्त्रियों का शिक्षित होना आवश्यक

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

है। वे मताधिकार का स्वतन्त्रतापूर्वक और स्वविवेकानुसार प्रयोग कर सके, यह उनकी शिक्षा पर ही निर्भर करता है। वे समाज और देश के प्रति अपना कर्त्तव्य को समझ सके, इसके लिए उनका शिक्षित होना और भी आवश्यक, अपरिहार्य है। [9]

इस प्रकार महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के अनुसार मनुष्यत्व बनाना ही शिक्षा का सर्वप्रथम लक्ष्य है न कि पशु बनाना। मनुष्य को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वह अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व सामाजिक विकास कर सके। शिक्षा इस प्रकार की हो कि उसका ज्ञान निरन्तर वृद्धि करता रहें। ऐसा नहीं होना चाहिए कि आज भोजन किया और उसकी तृप्ति दो दिन बाद हो। तृप्ति और दृष्टि का अनुभव भी उस समय हो जाना चाहिए। शिक्षा के दौरान जिसने भी इस बार उस वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर लिया है तो वह ज्ञान उसे कभी भी भूलना नहीं चाहिए, उसे तभी शिक्षा की तृप्ति हो पाएगी, अन्यथा नहीं।

गांधी और विनोबा के अनुसार ज्ञानार्जन की पिपासा हमारे जीवन का सच्चा आनन्द होगी। आजाद देश के स्वस्थ जीवन की यह कसौटी है कि वहां के नागरिक कितना उत्सुक व जागरूक है। अपनी शिक्षा योजना द्वारा ही हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते है तथा ज्ञानार्जन में अपना जीवन न्यौछावर कर सकते है।

गांधी और विनोबा जी कहते हैं कि अनुसंधान जिज्ञासा का फल है। जिज्ञासा वृत्ति ही मानव पाश्चात्य और संस्कृति की उन्नति के लिए उत्तरदायी है। जिस जाति में जिज्ञासा वृत्ति प्रबल हुई उस जाति ने दर्शन और ज्ञान के क्षेत्र में खोज एवं आविष्कार करके अपने आप को गौरव के पद पर प्रतिष्ठित किया। विनोबा जी ने कहा है कि वर्तमान भारतीयों में जिज्ञासा वृत्ति की कमी है। जब तक हमारी भारतीय जनता शिक्षित नहीं होगी, तब तक हमारे देश की प्रगति अवरूद्ध ही रहेगी। आज हम भारतीयों को प्रगति और उन्नति के लिए ऐसे उद्देश्यों से अभिप्रेरित होकर इन महान सत्कार्यों के सम्पादन के लिए कर्त्तव्यबद्ध होना है।

गांधी और विनोबा जी के अनुसार शिक्षा के द्वारा छात्रों को आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी बनाना भी है। इसीलिए उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए क्रियाओं को मुख्य माना है। जैसे कृषि, बागवानी, सफाई, खाना बनाना, लकड़ी की वस्तुएं बनाना आदि। इन सब क्रियाओं के माध्यम से जो भी ज्ञान प्राप्त किया जाता है वह कभी भी भूलता नहीं है तथा भविष्य में छात्रों के जीविकोपार्जन में भी सहायक सिद्ध होती है, जिससे उनकी बेकारी की समस्याएं दूर हो जाती है।

गांधी और विनोबा जी ने ऐसी शिक्षा का समर्थन किया है जो छात्रों का चारित्रिक विकास करती है न कि केवल बौद्धिक विकास ही करती है। वे शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक विकास को ही मानते है जिससे छात्रों को आत्मज्ञान हो सके। वे अपने जीवन में सही-गलत का निर्णय स्वयं ले सके।

निष्कर्ष :

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक ओर राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए अनिवार्य है। शिक्षा न केवल प्रचलित सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखती है अपितु नए मूल्यों का सृजन भी करती है। शिक्षा में सामाजिक परिवर्तन

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

लाने की क्षमता होती है। शिक्षा बड़े स्तर पर सामाजिक परिवर्तन हेतु एक और एकमात्र अधिकरण है। सामाजिक परिवर्तन के द्वारा समाज का विकास होता है और समाज का विकास उसमें निहित सम्पूर्ण मानवीय क्षमता के कुशलतापूर्वक उपयोग पर निर्भर करता है। अतः समाज के सभी नागरिकों के सहयोग के बिना पूर्ण विकास सम्भव नहीं हो सकता।

संदर्भग्रंथ सूची :

1. के. डी. गंगराड़, गांधी जी के शिखा सम्बन्धी क्रांतिकारी विचार गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, 2000, पृ० 2.

2. फौजिया परवीन, गांधी दर्शन में नारी स्वतन्त्रता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर, प्रथम संस्करण-2009, पृ० 29.

3. विनय कुमार चौधरी, विवेकानन्द, एक्सिस बुक प्रा. लि., नई दिल्ली, अरविन्द एवं गांधी के शिक्षा दर्शन, प्रथम संस्करण-2013, पृ० 403.

4. डॉ. वैद्यनाथ वर्मा, शिक्षा शास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975, पृ० 257.

5. डॉ. वैद्यनाथ वर्मा, शिक्षा शास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975, पृ० 258.

6. के. डी. गंगराड़, गांधी जी के शिखा सम्बन्धी क्रांतिकारी विचार गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, 2000, पृ० 51.

7. डॉ. किरण सिंह, प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009, पृ० 31.

8. रविन्द्र अग्निहोत्री, आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, सातवां संस्करण-2013, पृ० 236.

9. रविन्द्र अग्निहोत्री, आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, सातवां संस्करण-2013, पृ० 236.